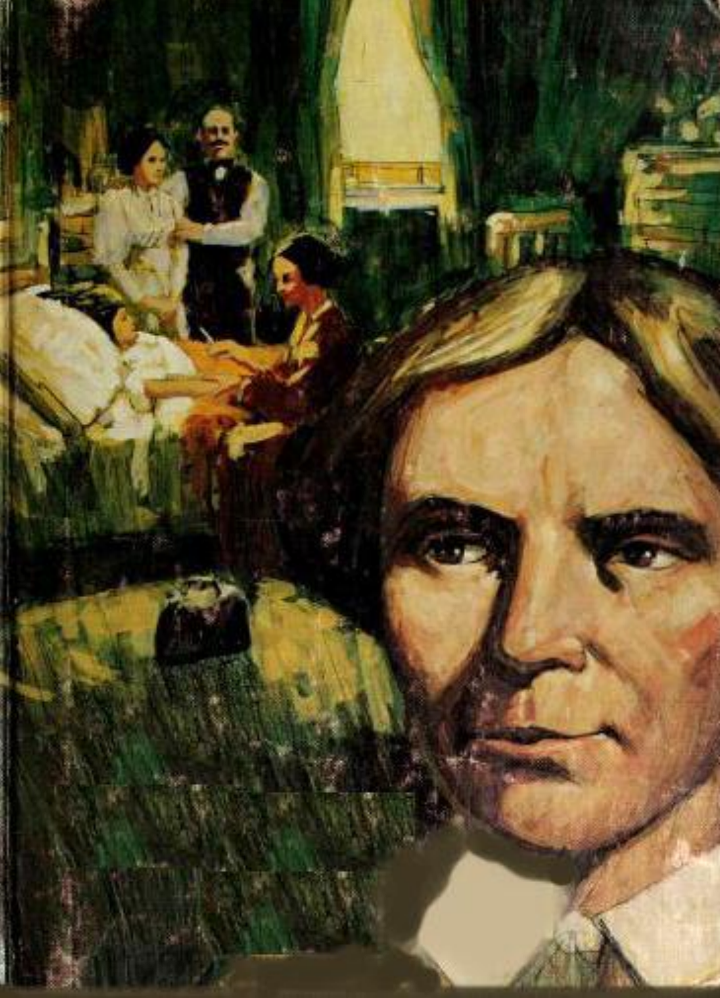


एलिज़ाबेथ ब्लैकवेल

पहली अमरीकी महिला डॉक्टर

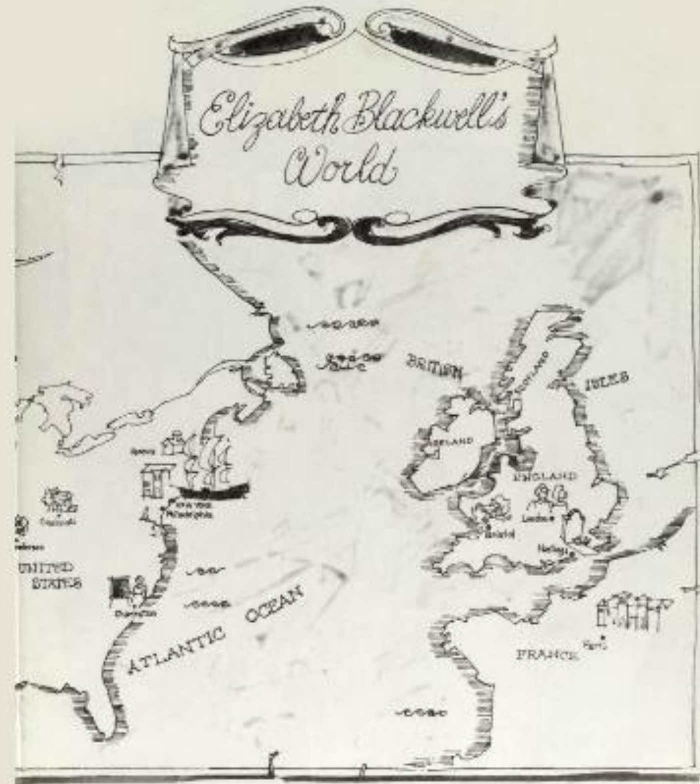
लेखक : ग्रांट



एलिज़ाबेथ ब्लैकवेल

पहली अमरीकी महिला डॉक्टर

एलिज़ाबेथ ब्लैकवेल की दुनिया





एक नई ज़िंदगी की तलाश

नन्ही एलिज़ाबेथ ऊपर के कमरे में खिड़की के पास सिकुड़ी हुई बैठी थी. बाहर दंगे हो रहे थे. लोग चीख-चिल्ला रहे थे और ब्रिस्टल, इंग्लैंड की सड़कों पर मशाले लेकर लूट-पाट कर रहे थे. वो इमारतों में आग लगा रहे थे जिससे पूरा शहर धू-धू करके जल रहा था. यह देखकर एलिज़ाबेथ को डर लग रहा था.



बाद में जब एलिज़ाबेथ के पिताजी घर आए तो उन्होंने नन्हीं एलिज़ाबेथ को दंगों का कारण बताया. "वो गरीब लोग बहुत भूखे हैं. उन्हें लगता है कि सरकार ने उनके साथ अन्याय किया है. अब लोगों को हिंसा एक अलावा और कोई चारा नज़र नहीं आता है.“

सामुएल ब्लैकवेल चीनी के एक धनी व्यापारी थे. पर वो एक गहरे चिंतक भी थे. वो गरीबों की मदद करना चाहते थे. पर सहायता कैसे करें? यह उन्हें नहीं पता था. उनके नौ बच्चे थे, जिनका अपने पिता के आदर्शों में विश्वास था.

वो 1830 का साल था. जल्द ही ब्लैकवेल परिवार पर भी गरीबी की मार पड़ी. मिस्टर ब्लैकवेल का कारोबार ठप्प हो गया. उन्होंने कहा :

"अब हम लोग अमरीका जायेंगे और वहां पहुंचकर एक नई शुरुआत करेंगे."





जब परिवार पानी के जहाज़ पर चढ़ा तब एलिज़ाबेथ अपनी छोटी बहन एमिली के हाथ कसकर पकड़े रही. इंग्लैंड का तट छोड़ते हुए उसने बहुत बहादुरी दिखाई. धीरे-धीरे इंग्लैंड पीछे छूटता गया. फिर उन्हें अपने चारों ओर सिर्फ अथाह नीला समुद्र ही दिखाई दिया.

जहाज़ पर कई गरीब मुसाफिर भी थे. वे बीमार पड़ने लगे. उनमें से कुछ मर भी गए. मरे लोगों को ऊपर लाया गया, फिर प्रार्थना के बाद उनके मृत शरीरों को समुद्र में फेंक दिया गया. एलिज़ाबेथ ने जब यह सब देखकर बहुत खौफ महसूस हुआ. पिताजी ने कहा, "वे लोग इसलिए मरे क्योंकि वे गरीब थे. वे सस्ते टिकट पर निचली, काली कोठरियों में यात्रा करने को मज़बूर थे. पूरी दुनिया में बहुत से लोग इसलिए मरते हैं क्योंकि वे गरीब होते हैं. हमें किसी तरह उनकी मदद करनी चाहिए."

यह सुनकर ग्यारह साल की एलिज़ाबेथ ने अपना सिर हिलाया.



मिस्टर ब्लैकवेल ने न्यू-यॉर्क में चीनी का नया कारोबार शुरू किया. पर बाद में उनकी अंतरात्मा ने उन्हें उस धंधे को बंद करने को मज़बूर किया. कारण? गन्ना, गुलाम लोगों द्वारा उगाया जाता था और वो गरीबों के शोषण का प्रतीक था.

"अश्वेत गुलामों को आज़ादी मिलनी चाहिए!" मिस्टर ब्लैकवेल ने कहा. "मैं ऐसा व्यापार कैसे कर सकता हूँ - जो गरीब लोगों के खून-पसीने और उनके शोषण पर टिका हो?" पर मिस्टर ब्लैकवेल को सिर्फ चीनी की खरीद-फरोख्त का ही अनुभव था. अब एक बार फिर उनका धंधा ठप्प हो गया. 1837 में मिस्टर ब्लैकवेल अपने परिवार को लेकर सिनसिनाटी, ऑहियो गए. उसके कुछ समय बाद मिस्टर सामुएल ब्लैकवेल का देहांत हो गया.



नौकरी करने को मज़बूर

तब 16 साल की एलिज़ाबेथ ब्लैकवेल को काम करना पड़ा. उस ज़माने में लड़कियों को बहुत कम ही पढ़ाया जाता था. पर उस समय के हिसाब से एलिज़ाबेथ ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की थी. इसलिए उन्हें केंटकी के एक स्कूल में टीचर की नौकरी मिल गई. वैसे अभी उनकी उम्र बहुत कम थी पर एलिज़ाबेथ मेहनत करके सफल होने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थीं.

जब मर्द लोग, महिलाओं को "नीचा" दिखाने की कोशिश करते, तो एलिज़ाबेथ को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था. अपने ज़माने की कई प्रगतिशील महिलाओं की तरह एलिज़ाबेथ भी महिलाओं के अधिकारों का प्रति सचेत हो रही थीं.

क्या महिलाओं को नौकरी करके अपनी आजीविका अर्जित करने का अधिकार नहीं था? उस ज़माने में सबसे होशियार महिला टीचर्स को भी मर्दों की अपेक्षा कहीं काम वेतन मिलता था. क्या एलिज़ाबेथ, मर्द टीचर्स से ज़्यादा नहीं जानती थी? हाँ, वो मर्द टीचर्स की तुलना में कहीं ज़्यादा होशियार और मेहनती थी. पर मर्द लोग उसे यह सिद्ध करने का कभी मौका ही नहीं देते थे!

इस तरह साल बीतते गए. एलिज़ाबेथ को लगा जैसे वो अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर रही हों. जब वो 24 साल की हुईं तो एलिज़ाबेथ को अपनी एक मित्र - मैरी को देखने जाना पड़ा. मैरी बहुत बीमार थी और मृत्यु की कगार पर थी.





मैरी ने एलिज़ाबेथ का हाथ पकड़कर कहा, "एक असंवेदनशील और गुस्सैल मर्द डॉक्टर मेरा इलाज कर रहा है. काश, मेरा इलाज किसी महिला डॉक्टर ने किया होता!”

एलिज़ाबेथ ने मैरी की बात से सहमति जताई. फिर मैरी ने एलिज़ाबेथ से कहा, "तुम अभी भी युवा हो. तुम बहुत अच्छी डॉक्टर बन सकती हो."

दरवाज़ा खुला

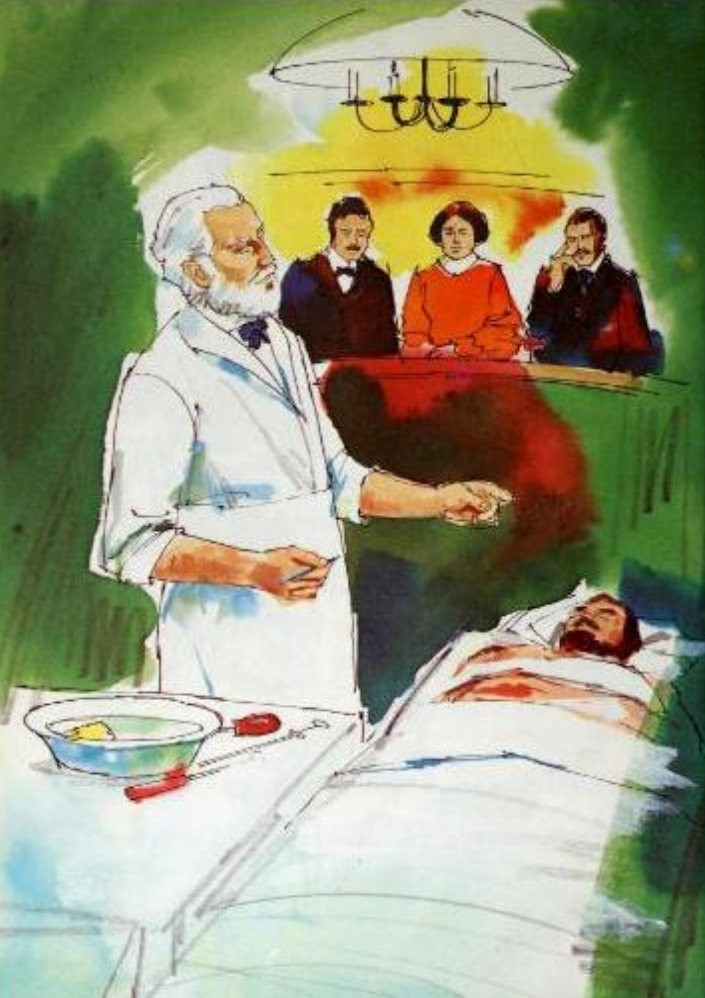
पर यह बात असंभव लगती थी! उस ज़माने में महिलाएं, डॉक्टर नहीं बनती थीं. पर एलिज़ाबेथ मृत्युशय्या पर पड़ी अपनी मित्र के शब्द नहीं भूली. उसने कई महीने उसपर गहराई से सोचा. फिर उसने अपने परिवार से कहा, "मैं डॉक्टर बनने की कोशिश करूंगी."

शुरू में एलिज़ाबेथ डॉक्टरी पढ़ने के लिए कोई कॉलेज ही नहीं मिला. उस ज़माने में कोई भी मेडिकल कॉलेज लड़कियों को दाखिला नहीं देता था. इसलिए शुरू में एलिज़ाबेथ को निजी रूप से डॉक्टरी की पढ़ाई करनी पड़ी. इसमें उसकी मदद कुछ क्वेकर्स डॉक्टर्स ने की. क्वेकर्स, महिलाओं के अधिकारों में यकीन करते थे.

1847 में एलिज़ाबेथ ने जिनेवा मेडिकल कॉलेज, न्यू-यॉर्क में दाखिले के लिए अर्ज़ी भेजी. कॉलेज ने मज़ाक में एलिज़ाबेथ को दाखिला भी दे दिया. कॉलेज के टीचर्स और छात्रों का मानना था कि कुछ दिनों में झक मारकर एलिज़ाबेथ कॉलेज छोड़ देगी. फिर सब लोग उसकी खिल्ली उड़ाएंगे!

उस ज़माने में अच्छे कुलीन घरों की लड़कियां "खून" देखकर ही बेहोश हो जाती थीं. शरीर कैसे काम करता है? उस बारे में शरीफ लड़कियां कुछ भी चर्चा नहीं करती थीं. पर एलिज़ाबेथ बहुत होशियार थी. उसे लगता था कि वो कोई भी विषय आसानी से सीख सकती थी.





जो मर्द सीख सकते थे, वो एलिज़ाबेथ भी सीख सकती थी. जो लड़के शुरू में हंस रहे थे और ताने मार रहे थे, वे एलिज़ाबेथ की क़ाबलियत और मेहनत देखने के बाद उसकी इज़्ज़त करने लगे. धीरे-धीरे लोगों की तानाकशी कम हुई और लोग एलिज़ाबेथ का आदर करने लगे. पर जिनेवा शहर के लोग अभी भी एलिज़ाबेथ को एक "अश्लील" औरत मानते थे. शहर में कोई भी एलिज़ाबेथ से बात नहीं करता था.

अपनी गर्मियों की छुट्टियों में एलिज़ाबेथ ने फ़िलेडैल्फ़िया के अनाथालय में बीमार लोगों का इलाज किया. उस अनाथालय में शहर के सबसे गरीब लोग आते थे. उन गरीब लोगों का इलाज करते हुए एलिज़ाबेथ को खुद अपनी अज्ञानता का आभास हुआ. "मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है!" उसने खुद से कहा. "गरीबों के बीच और कितना काम करने की ज़रुरत है. गरीबों की सहायता के बड़े काम ले लिए मुझे अन्य महिलाओं को भी प्रेरित करना चाहिए!"



उस साल पतझड़ के बाद एलिज़ाबेथ दुबारा मेडिकल कॉलेज में लौटी. उस ज़माने में मेडिकल की डिग्री के लिए कॉलेज में कम समय के लिए ही पढ़ना पड़ता था. 23 जनवरी 1849 को एलिज़ाबेथ ब्लैकवेल अमरीका की पहली महिला डॉक्टर बनीं.

उसके बाद वो पेरिस गईं जहाँ उन्होंने महिलाओं और बच्चों की बीमारियों के बारे में और अधिक अध्धयन किया. एक बच्चे का इलाज करते समय एलिज़ाबेथ की एक आँख में इन्फेक्शन हो गया. उसके कारण उनकी एक आँख की रोशनी हमेशा के लिए जाती रही.

अगले कुछ महीने एलिज़ाबेथ के लिए खराब बीते. एक ओर उन्हें बहुत तकलीफ थी, और दूसरी ओर वो खुद अपनी काबलियत पर संदेह करने लगी थीं.

उसके बाद एलिज़ाबेथ इंग्लैंड गईं और वहां उनकी दोस्ती प्रसिद्ध नर्स फ्लोरेंस नाइटिंगेल से हुई. 1850 में एलिज़ाबेथ को एक खुशखबरी मिली. लीडिया फोल्गर अमरीका में जन्मीं पहली महिला डॉक्टर बनीं . उसके बाद एलिज़ाबेथ की छोटी बहिन एमिली ने भी डॉक्टर बनने की इच्छा ज़ाहिर की.



अस्पताल की स्थापना

1851 में डॉ. एलिज़ाबेथ ब्लैकवेल, न्यू-यॉर्क वापिस लौटीं. गरीबों की मदद करने की उनकी दिली इच्छा थी. पर शुरू में उनकी मेडिकल प्रैक्टिस बिल्कुल नहीं चली. लोगों को महिला डॉक्टर की काबलियत पर संदेह था. लोगों के मन में महिलाओं की क्षमताओं को लेकर भी कई पूर्वाग्रह थे.

पर धीरे-धीरे करके महिलायें डॉ. एलिज़ाबेथ के पास इलाज कराने के लिए आने लगीं. बीमार औरतें अक्सर कहतीं, "हम आपके पास क्यों नहीं आएं, आप तो पूरी तरह पढ़ी-लिखी डॉक्टर हैं!"

1853 में डॉ. एलिज़ाबेथ ने गरीब महिलाओं और बच्चों के इलाज के लिए एक क्लिनिक खोली. इस काम में डॉ. एलिज़ाबेथ की छोटी बहन एमिली ने उनका हाथ बटाया.

1854 में एमिली डॉक्टर बनीं. दोनों बहनों ने अपने धनी मित्रों से पैसों की भीख मांगी जिससे कि वे एक सचमुच का अस्पताल शुरू कर सकें.

1857 में, डॉ. एमिली और डॉ. एलिज़ाबेथ ब्लैकवेल का सपना साकार हुआ. तब उन्होंने महिलाओं और बच्चों के लिए एक अस्पताल स्थापित किया. वो दुनिया का पहला अस्पताल था, जिसको पूरी तरह महिलाएं चलाती थीं.

वो अस्पताल न केवल गरीबों का इलाज करता था, वो नर्सों को ट्रेन भी करता था. एक अश्वेत महिला डॉक्टर रेबेका कोल भी उनके साथ जुड़ीं. उन्होंने किसी भी अमेरिकी शहर में पहली "विजिटिंग डॉक्टर" की सुविधा शुरू की.





1868 में अस्पताल ने महिलाओं के प्रक्षिक्षण के लिए खुद अपना मेडिकल कॉलेज शुरू किया. उसके बाद डॉ. डॉ. एलिज़ाबेथ ब्लैकवेल को इंग्लैंड से एक पत्र मिला जिसमें उनसे "जो उन्होंने अमरीका में किया था, वही इंग्लैंड में आकर करने की प्रार्थना की गई."

1869 में डॉ. एलिज़ाबेथ, अस्पताल का सारा कार्यभार अपनी बहन डॉ. एमिली के हाथों में छोड़कर अपने वतन इंग्लैंड लौटीं. वहां उन्होंने 40 वर्ष कड़ी मेहनत की. वो महिलाओं के अधिकारों की एक प्रखर प्रवक्ता भी बनीं.

31 मई 1910 को उनका देहांत हुआ.

समाप्त